बरकत कया है?

भाषा के अनुसार बरकत का मतलब होता है "बढ़ना". यह एक छुपी हुई और गैर महसूस नेमत है जो ईश्वर(अल्लाह) जिसपर चाहता है उस पर बरसाता है . इस नेमत को माल और दौलत, समय, संतान, दुनिया और आखिरत (भविष्य) मृत्यु के बाद के जीवन के रूप में बढ़ाया जा सकता है .

परम बरकत वह है जब ईश्वर आपसे प्रसन्न हो ;इसके फलस्वरुप वह आप को देखता है और आप पर मुस्कुराता ्य आपके ईश्वर को इतना प्रसन्न करें कि ईश्वर (अल्लाह) आप पर प्रसन्न होकर मुस्कुराए .यह है सबसे बड़ी नेमत जो आप अपने ईश्वर से प्राप्त कर सकते हैं. यह नेमत आपको इस जीवन में, दुनिया में ,और मृत्यु के बाद के जीवन में उन्नति प्रदान कर सकती है.
दुनिया के जीवन में बरकत ईश्वर इस रुप में प्रदान करते हैं कि वह आपको अपना बना लेता है ;अपने नाम को ऊपर उठाने .दूसरों तक अपना संदेश फैलाने ,उनकी देखभाल करने के लिए आपको आपका ईश्वर स्वीकार कर लेता है. अगर ईश्वर ने आपको बरकत दिया तो इसका सबसे बड़ा सबूत यह है कि वह आपको मृत्यु के बाद ्ग यानी जन्नत में उच्च स्थान प्राप्त कराता है.

्ष पर पहुंचेंगे कि किस प्रकार अल्लाह (ईश्वर) आप पर अपनी पुरस्कारों को बढ़ा सकता है, खासकर मुबारक महीने रमजान के पहले के चंद महीनों में.

ईश्वर आपके हृदय को खोलें और आपको उन चुने हुए लोगों में से बनाएं जिस पर ईश्वर अपना नेमत बरसाताहै और जिस पर वह मुस्कुराएगा .

्देश)

दया

- जरीर बिन अब्दुल्लाह(ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) फरमाते हैं कि पैगंबर मोहम्मद ने फरमाया ;-“जो शख्स लोगों पर दया नहीं दिखाता ईश्वर भी उस पर दया नहीं दिखलाएगा.” [तिरमिजी -पुस्तके हदीस]

- अब्दुल्लाह बिन अम्र(ईश्वर इनसे प्रसन्न हो) ने कहा पैगंबर मोहम्मद फरमाते हैं :-“दयालु पर ‘अर – रहमान’ (ईश्वर का एक नाम जिसका मतलब है रहमत करने वाला)दया करता है . तुम जमीन वालों ्भ के रिश्ते नातों को जोड़ता है ईश्वर उसे अपनी कृपा से जोड़ता है और जो इसे तोड़ता है ईश्वर उस मनुष्य को अपनी रहमत से तोड़ देता है.” [तिरमिजी]

रमजान के महीने में उदारता

्ति थे और रमजान के महीने में आपकी उदारता और अधिक हो जाती थी. देवदूत हजरत जिब्रील अलैहिस्सलाम रमजान की हर रात उनके सामने कुरान तिलावत फरमाते थे .रमजान के महीने में पैगंबर मोहम्मद की उदारता बारिश के बादलों को बहाने वाली हवाओं से अधिक तेज और खूबसूरत ्लिम]

- जैद बिन खालिद अल जुहानी कहते हैं कि पैगंबर हजरत मोहम्मद फरमाते हैं :-“जो इंसान किसी रोजेदार को रोजा इफ्तार कराता है अल्लाह उसे उस रोजेदार के रोजे के बराबर सवाब प्रदान करता है .इस पर रोजेदार के पुण्य यानी सवाब में कोई कमी नहीं की जाती.” [तिरमिजी]

्ज को माफ करना

्च करता है उसका अज़र यानी सवाब 700 गुना अधिक लिखा जाता है.”
[तिरमिजी]

- अबू कतादा ने कहा पैगंबर हजरत मुहम्मद फरमाते हैं :-“जो इंसान यह चाहता है कि ईश्वर उसे मृत्यु के ्लिम]
- हुजैफा (ईश्वर इनसे प्रसन्न रहें) फरमाते हैं कि हजरत मोहम्मद फरमाते हैं :-“मालदार इंसान को इश्वर ्जदारों को नरम दिली के साथ मौहलत दिया करता था.’ इस पर ईश्वर कहेंगे ‘यह गुण तो हमारे लिए हैं जो तुमने अपनाया. जाओ आज हमने तुम्हें माफ किया मेरे बंदे.” [इस हदीस को अकबर बिन ्लिम]

हिदायत प्रदान करना

- अबू मसूद उकबह बिन अम्र अल अंसारी बद्री ने कहा :-"पैगंबर हजरत मोहम्मद फरमाते हैं- 'जो किसी मनुष्य को नेकी का रास्ता दिखलाता है उसको नेकी करने वाले के बराबर सवाब मिलता है." ्लिम]
- अबू हुरैरा ने फरमाया पैगंबर हजरत मोहम्मद ने कहा:-" जो किसी इंसान को नेकी करने की दावत देता है उसे तमाम नेकी करने वालों के बराबर सवाब मिलता है, और इससे नेकी करने वालों के सवाब में कमी नहीं किया जाता. और जो इंसान किसी को बुराई की दावत देता है उसे तमाम उस बुरा काम ्लिम]

्द

- नोमान बिन बशीर ने बताया पैगंबर हजरत मोहम्मद ने फरमाया:-" मुसलमान अपनी आपसी ्लिम]

- इब्ने ओमर (ईश्वर इनसे प्रसन्न हो) फरमाते हैं पैगंबर हजरत मुहम्मद ने फरमाया :-"मुसलमान आपस में भाई होते हैं .तो उसे चाहिए कि ना तो अपने भाई पर अत्याचार करें और ना ही उसे किसी अत्याचारी के हवाले करें.(जैसे शैतान या नफ़्स या कोई बुराई जिसके प्रति उसका झुकाव हो) जो अपने भाई की किसी जरूरत को पूरा करेगा ईश्वर उसकी जरूरत को पूरा करेंगे जो अपने भाई की किसी तकलीफ को दूर करेगा ईश्वर मृत्यु के बाद के जीवन में उससे उसकी तकलीफ को दूर करेंगे. जो अपने भाई को किसी मुसीबत से बाहर निकालेगा ईश्वर उसे मृत्यु के बाद के जीवन की मुसीबत से बाहर निकालेंगे. जो अपने किसी भाई के दोष पर पर्दा डालता है ईश्वर मृत्यु के बाद के जीवन में उसके दोष पर पर्दा ्लिम]

जरुरतमंदों की मदद करना

- अनस (ईश्वर इन से प्रसन्न हो) फरमाते हैं कि हजरत मोहम्मद फरमाते हैं:-" तुम में से कोई भी सच्चा मुसलमान तब तक नहीं बन सकता जब तक वह अपने भाई के लिए वह चीज़ ना पसंद करें जो स्वयं ्लिम]

- अबू हुरैरा फरमाते हैं कि अल्लाह के रसूल हजरत मुहम्मद ने फरमाया :-"जो किसी मुसलमान की दुनिया में किसी तकलीफ को दूर करता है ईश्वर आखिरत यानी जी उठने के दिन ,उसकी तकलीफ दूर करेंगे .जो अपने भाई के दुख के भार को हल्का करेगा ,ईश्वर उसके भार को आखिरत में हल्का करेंगे .जो किसी मुसलमान के दोष पर पर्दा डालता है ईश्वर इस जीवन में और आखिरत में ऐसे मनुष्य के दोषों पर पर्दा डालेंगे. ईश्वर अपने बंदे की तब तक मदद करते हैं जब तक वह अपने भाई की मदद करता रहता है. जो ज्ञान की तलाश में रास्ता तय करता है अल्लाह जन्नत तक के रास्ते को उसके लिए

्जिदों में जमा होते हैं ,अल्लाह की किताब को पढ़ते हैं ,पढ़ाते हैं उन पर ईश्वर यानी अल्लाह सकीना ्ति का नाम अपने करीबी फरिश्तों की मजलिस में लेते हैं .जो शक्स भलाई के काम करने में पीछे ्लिम]

- मुसबबिन साद बिन अबी वक्कास ने कहा:-" साद अपने आप को अपने से कमज़ोरो से अच्छा समझते थे .पैगंबर मोहम्मद ने उनसे कहा कि ऐ साद, तुम्हें मदद और प्रावधान तुम में से कमजोरों की वजह से मिलती है." [बुखारी शरीफ]

्ति का मुझ पर कुछ हक है और अल्लाह के रसूल की हुरमत की कसम (आपके कब्र मुबारक की तरफ ्ति के प्रति अपने अच्छे ताल्लुकात का इस्तेमाल करूं ?' उस शक्स ने कहा' जी अगर आप चाहे.' इस ्जिद से बाहर जाने को तैयार हुए. एक शख्स ने कहा कि इब्ने अब्बास क्या आप नहीं जानते कि ्जिद से बाहर नहीं जा सकते. इस पर इब्ने अब्बास ने फरमाया 'नहीं मैं नहीं भूला हूं .लेकिन मैंने अल्लाह के रसूल से (आपके कब्र मुबारक की तरफ इशारा करते हुए .आपकी मृत्यु कुछ दिन पहले ही ्य उसके हक़ में 10 वर्षों तक इत्तेकाफ़ करने से बेहतर है. और जो केवल एक दिन इत्तेकाफ़ में केवल अपने ईश्वर को प्रसन्न और उसके दीदार करने की ललक से बैठता है ,तो ईश्वर उसे नरक से तीन खंदक दूर करते हैं और एक खंदक की चौड़ाई दुनिया और आसमान से भी अधिक है ." [तबरानी बैहाकी और हकीम]

्ष करने वाले के समान है, या पूरी रात नमाज पढ़ने और पूरे दिन रोजा रखने वाले के समान है. ्थ हूं. मुझे ऐसा उपदेश दीजिए जो छोटा हो लेकिन पुरा य में अधिक हो. अब दर्दा ने फरमाया,' किसी ्द या औरत को प्रसन्न कर दोगे तो ईश्वर तुम पर प्रसन्न होकर मुस्कुराएगा और अगर उसकी मुस्कुराहट तुम पर पड़ गई तो वह तुम्हें कभी भी नरक में नहीं डालेगा.'

<u>दान-पुराय और उदारता</u>

- अबू हुरैरा बताते हैं कि अल्लाह के रसूल ने फरमाया :-"दो फ़रिश्ते हर सुबह यह ऐलान करते हैं कि , 'ऐ अल्लाह ,जो दान पुरा य करता है आप उसे और दें ;और दूसरा फरिश्ता कहता है कि ऐ ,अल्लाह जो ्लिम]

- अबू हुरैरा जिक्र करते हैं कि अल्लाह के रसूल ने फरमाया:-" अल्लाह फरमाता है आदम की औलाद ्लिम]
- अबू हुरैरा जिक्र करते हैं कि अल्लाह के रसूल ने फरमाया:-" माल बांटने से कम नहीं होता. अल्लाह माफ करने वालों की इज्जत को बढ़ाता है. अल्लाह के खातिर जो एक दूसरे से नम्रता दिखाता ्लिम]

बीमारों की मदद करना

- अबू हुरैरा जिक्र करते हैं कि अल्लाह के रसूल ने फरमाया:-" यकीनन अल्लाह जी उठने के दिन फरमाएगा, 'आदम की औलाद! मैं बीमार था लेकिन तूने मेरी खबर ना ली.' इंसान कहेगा, 'अल्लाह मैं ्ति बीमार था. अगर तू उस की खबर लेने जाता तो मुझे उसके पास पता है. आदम की औलाद मैंने तुझसे खाना मांगा परंतु तूने मुझे खाना ना दिया.' इंसान कहेगा, 'या अल्लाह! मेरे रब. मैं तुझे कैसे ्ति भूखा था. अगर तू उसे खाना खिलाता ,तो उसका अज़र मेरे पास पाता.' इसी तरह अल्लाह पूछेंगे कि मैंने तुझ से पानी मांगा लेकिन तूने मुझे पानी नहीं पिलाया. बंदा बोलेगा कि मैं तुझे कैसे पानी पिला सकता हूं जबकि तू सारे जहां का रब है. अल्लाह कहेंगे कि मेरा फलां बंदा प्यासा पुकार रहा था. अगर ्लिम]
- अली बिन अबू तालिब (अल्लाह इन से प्रसन्न हो) फरमाते हैं कि उन्होंने अल्लाह के रसूल को फरमाते हुए सुना :-"अगर कोई मुसलमान अपने बीमार भाई से सुबह मुलाकात करता है तो 70000 फरिश्ते शाम तक उसके लिए दुआएं करते हैं. अगर वह शाम में उसकी अयादत यानी मुलाकात करता है तो 70000 फरिश्ते सुबह तक उसके लिए दुआएं करते हैं और वह इसका अज़र जन्नत में देखेगा." [तिरमिजी]

अल्लाह के रास्ते में खड़ा रहना

्लिम फौज की सुरक्षा के लिए समंदर के करीब तैनात थे. लोगों को कुछ आहट मिली. लोगों ने किनारे ्ति उन के समीप आया और बोला कि अबू हुरैरा आप क्यूँ खड़े हैं? अबू हुरैरा ने जवाब दिया कि ्य शब ए कदर की रात में हजरे अस्वद के समीप नमाज़ पढ़ने से अधिक बेहतर है."
[हदीस नंबर 1068 सिलसिला हदीस सही]

पवित्र कुरान के आयात

्च करोगे कयामत में तुमको भरपूर वापस मिलेगा और तुम्हारा हक ना मारा जाएगा. [कुरान सूरह बकरा आयत नंबर 272]

- ऐ रसूल तुम कह दो कि मेरा परवरदिगार अपने बंदों में से जिसके लिए चाहता है रोजी कुशादा कर देता ्च करते हो वह उसका अजर देगा और वह तो सबसे बेहतर रोजी देने वाला है. [कुरान सूरा नंबर 34 आयत नंबर 39]

्च करो, खुदा तो उसको जरुर जानता है. [कुरान सूरा नंबर 3 आयत नंबर 92]

- और तमाम चीजों की का रूजू खुदा ही की तरफ होता है. ऐ ईमान वालों ! रूको करो और सजदे करो और अपने परवरदिगार की इबादत करो और नेकी करो ताकि तुम कामयाब हो जाओ.
  [कुरान सूरा नंबर 22 आयत नंबर 77]

- क्या तुमने उस शख्स को भी देखा है जो रोज़े ज़ज़ा को झुठलाता है ? यह तो वही है जो यतीम को धक्के देता है और मोहताजों को खिलाने के लिए लोगों को आमादा नहीं करता.
  [कुरान सूरा नंबर 107 आयत 1 -3]

<u>अब आगे क्या?</u>

- अगर इन तमाम बातों ने आपके अंदर जोशो-खरोश को जिंदा किया है, तो आपको अपने आप से यह सवाल पूछना चाहिए कि आप क्या कर सकते हैं?

- अगर आप चाहते हैं कि आपको शाबान और रमजान और पूरे साल की बरकतें मिले!
- अगर आप यह चाहते हैं कि आपकी तमाम दुआओं को कुबूल किया जाए!
- अगर आप यह चाहते हैं कि आपकी तमाम गुनाहों पर पर्दा डाल दिया जाए ,उन्हें माफ़ कर दिया जाए ,और उन्हें भुला दिया जाए!
- अगर आप यह चाहते हैं कि आपकी कदमों को और आपके कदमों के नीचे की धूल को 70000 फरिश्ते रोजाना चूमे और आप की हिफाजत करें!

  ्जिद-ए-नबवी में 10 साल के इत्तेकाफ़ से ज्यादा सवाब मिले!

- अगर आप यह चाहते हैं कि आप का शुमार उन लोगों में से हो जिन पर अल्लाह ताला मुस्कुराएंगे .उन्हें पाकी और तहारत अता फरमाएंगे. .जहन्नम की आग से बचाएंगे और उन पर हमेशा हमेश के लिए अपनी खुशी का इजहार करेंगे!

  ्फ अल्लाह के लिए हैं और वह अपने वक्त और अपनी ताकतों को अल्लाह के लिए,उसके दीन को उठाने के लिए और अल्लाह के दिन की मदद के लिए हैं. और आपको हजरे अस्वद के सामने लैलतुल कद्र में खड़े होकर नमाज पढ़ने से ज्यादा अजर मिले!

- अगर आप खुद अपने आप से मोहब्बत करते हैं आप अपने रब से मोहब्बत करते हैं ;मुसलमानों से और इंसानियत से मोहब्बत करते हैं.और आप अपने लिए और अपने परिवार के लिए एक अज़ीम दौलत को छोड़कर जाना चाहते हैं!

- अगर आप उपरोक्त इन में से किसी भी एक चीज या तमाम चीजों को हासिल करना चाहते हैं?

<u>तो यह वह काम है जो आपको करने चाहिए</u>

्रित करेंऔर प्रोजेक्ट और परियोजना मुस्कुराहट को शुरू करें.

<u>मैं क्या कर सकता हूं?</u>

बहुत सारे काम है जो आप कर सकते हैं. बस अपनी चारों और देखें, बहुत लोग जरूरतमंद हैं .और और बहुत लोग आपकी मदद से खुश होंगे, अगर आपके दिमाग में कोई विचार नहीं आ रहे हैं तो कुछ नसीहतें हम आपको देना चाहेंगे.

1. **जरूरतमंद को पहचाने**

्क स्थापित कर सकते हैं.

्क स्थापित कर सकते हैं.

्क स्थापित कर सकते हैं वहां से आप जरूरतमंदों की एक सूची ले सकते हैं और यह देख सकते हैं कि उनको किस प्रकार की मदद की जरूरत है, मसलन दवाइयां, बैसाखी, इत्यादि.

्क स्थापित कर सकते हैं या अगर आप किसी यतीम को स्वयं जानते हैं तो खुद उनकी मदद कर सकते हैं.

्द नजर दौड़ाएं और जरुरतमंदों को पहचाने. बहुत सारे साधारण लोग अचानक किसी जरूरत में पढ़ सकते हैं. जैसे बेवा औरतें, तलाकशुदा औरतें ,गुमशुदा लोग, ऐसे लोग जिनकी नौकरियां जा चुकी है, या जो किसी मुसीबत में फंसे हैं.

आप अखबार पढ़ें, समाचार देखे, बहुत सारे ऐसे मुल्क है जहां लोग रिफ्यूजी की जिंदगी जी रहे हैं या प्राकृतिक ्निया, इंडोनेशिया, चाइना, इत्यादि.

अपने चारों ओर लोगों को देखें आपके घर में काम करने वाली, आपके नौकर-चाकर, आपके मुलाजिम. यह लोग भी ज़रूरत में पड़ सकते हैं. उनकी जरूरतों को पहचाने और इन्हें अल्लाह के खातिर आराम पहुंचाएं .

2. **अपने वादे और अपनी प्रतिज्ञा को मजबूत करें और इन चीजों में से आप कुछ कर सकते हैं, जैसा आपकी सलाहियत हो.**

इस रमजान जरूरतमंदों के लिए इफ्तार का इंतजाम करें

्टियों में पानी का या बिजली के बिल के भुगतान का इंतजाम करें.

्क करें और देखें कि आप उनकी किस तरह मदद कर सकते हैं जैसे साफ पानी का इंतजाम करना साफ हवा का इंतजाम करना लोगों की घरों की मरम्मत, शौच का इंतजाम करना. इत्यादि.

्च को उठा कर, उनकी जरूरत को पूरा करके, उनकी अयादत करके, और उनकी जरूरत को पूरा करके. अगर बीमार शख्स अपने परिवार का एकलौता कमाने वाला है तो आप उसके परिवार के पालन पोषण के लिए इंतजाम कर सकते हैं.

्जुमा या दुआ हदीस या इस्लामिक अदब के किताबों को इन क्षेत्रों में बांट सकते हैं.

्रित करके आप लोगों में या विभिन्न मुल्कों में बांट सकते हैं. इत्यादि.

<u>मुस्कुराहट को फैलाएं</u>

आपको बस एक नेक नियत की जरूरत है जो विश्वास से भरा हो. और इस बात का यकीन हो कि अगर आप इन तमाम कदमों को उठाते हैं और अगर अल्लाह ने चाहा तो आप तमाम नेमतों को हासिल कर सकते हैं.

मेरे प्यारे भाइयों और बहनों इस्लाम और इंसानियत में, आज हम कर सकते हैं कल शायद हमें मौका ना मिले; ्रण पुकार है जो मेरे लिए है और आपके लिए है ,ताकि हम इस दुनिया में और इस दुनिया के बाद आने वाली दुनिया में बेहतरीन नेमत हासिल कर सके!!

और सबसे बड़ी नेमत है अल्लाह का हमसे खुश होना और हम पर मुस्कुराना

वक्त बर्बाद ना करें .बहाने ना बनाएं.ना ही सरकार को दोष दें .अपने अंदर की नेफाक को, आलसपन को और मतभेद को मिटाएं. लोगों की जिंदगी में मुस्कुराहट लाए ताकि अल्लाह हम पर मुस्कुराए....